सीबीएसई कक्षा -12 हिंदी कोर

महत्वपूर्ण प्रश्न

पाठ – 13

धर्मवीर भारती (काले मेघा पानी दे)

<u>महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर</u>

1. 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण के लेखक ने लोक-प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहकर उनके निराकरण पर बल दिया है।- इस कथन की विवेचना कीजिए।

उत्तर- लेखक ने इस संस्मरण में लोक प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहा है। पाठ में इंदर सेना के कार्य को वे पाखंड मानते हैं। आम व्यक्ति इंदर सेना के कार्य को अपने-अपने तर्कों से सही मानता है, पंरतु लेखक इन्हें गलतबताता है। इंदर सेना पर पानी फेंकना पानी की क्षति है जबकि गरमी के मौसम में पानी की भारी कमी होती है। ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण देश का बोद्धिक विकास नहीं हो पाता तथा देश को एक बार गुलामी का दंश भी झेलना पड़ा।

2. 'काले मेघा पानी दे' पाठ की 'इंदर सेना' युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती है -तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- इंदर सेना युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती है। इंदर सेना सामूहिक प्रयास से इंद्र देवता को प्रसन्न करके वर्षा कराने के लिए कोशिश करती है। यदि ये लोग समाज की बुराइयों, कमियों के खिलाफ सामूहिक प्रयास करें तो देश का स्वरूप अलग ही होगा। वे शोषण को समाप्त कर सकते हैं। दहेज का विरोध करना, आरक्षण का विरोध, नशाखोरी के खिलाफ आवाज़ उठाना-आदि कार्य सामूहिक प्रयासों से ही हो सकते हैं।

3. यदि आप धर्मवीर भारती के स्थान पर होते तो जीजी के तर्क सुनकर क्या करते और क्यों? 'काले मेघा पानी दे' -पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर- यदि मैं लेखक के स्थान पर होता तो जीजी का तर्क सुनकर वही करता जो लेखक ने किया, क्योंकि तर्क करने से तो जीजी शायद ही कुछ समझ पातीं, उनका दिल दुखता और हमारे प्रति उनका सद्भाव भी घट जाता। लेखक की भाँति में भी जीजी के प्यार और सद्भाव को खोना नहीं चाहता। यहीं कारण है कि आज भी बहुत-सी बेतुकी परंपराएँ हमारे देश को जकड़े हुए हैं।

4. 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर जल और वर्षा के अभाव में गाँव की दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर- गली-मुहल्ला, गाँव-शहर हर जल लोग गरमी से भुन-भुन कर त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रहे थे। जेठ मास भी अपना ताप फैलाकर जा चुका था और अब तो आषाढ़ के भी पंद्रह दिन बीत चुके थे। कूएँ सूखने लगे थे, नलों में पानी नहीं आता था। खेत की माटी सूख-सुख कर पत्थर हो गई थी। पपड़ी पड़ कर अब खेतों में दरारें पड़ गई थीं। झुलसा देने वाली लू चलती थी। ढोर-ढंगर प्यास से मर रहे थे, पर प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था। निरुपाय से ग्रामीण पूजा-पाठ में लगे थे। अंत में इंद्र से वर्षा के लिए प्रार्थना करने इंदर सेना भी निकल पड़ी थी।

5. दिन-दिन गहराते पानी के संकट से निपटने के लिए क्या आज का युवा वर्ग 'काले मेघा पानी दे' की इंदर सेना की तर्ज पर कोई सामूहिक आंदोलन प्रारंभ कर सकता है? अपने विचार लिखिए।

उत्तर- आज के समय पानी के गहरे संकट से निपटने के लिए युवा वर्ग सामूहिक आंदोलन कर सकता है। युवा वर्ग शहर व गाँवों में पानी की फिज़ूलखर्ची को रोकने के लिए प्रचार आंदोलन कर सकता है। गाँवों में तालाब खुदवा सकता है ताकि वर्षा जल का संरक्षण किया जा सके। युवा वृक्षारोपण अभियान चला सकता है ताकि वर्षा अधिक हो तथा पानी भी संरक्षित रह सके। वह घर-घर में पानी के सही उपयोग की जानकारी दे सकता है।

6. ग्रीष्म में कम पानी वाले दिनों में गाँव-गाँव में डोलती मेढक-मंडली पर एक बाल्टी पानी उड़ेलना जीजी के विचार से पानी का बीज है, कैसे?

उत्तर- जीजी का मानना है कि गरमी के दिनों में मेढक-मंडली पर एक बाल्टी पानी उड़ेलना पानी का बीज बोना है। वे कहती हैं कि जब हम किसी को कुछ देंगे तभी तो अधिक लेने के हकदार बनेंगे। इंद्र देवता को पानी नहीं देंगे तो वह हमें क्यों पानी देगा। ऋषियों व मुनियों ने भी त्याग व दान की महिमा गाई है। पानी के बीज बोने से काले मेघों की फसल होगी जिससे गाँव, शहर, खेत-खलिहानों को खूब पानी मिलेगा।

7. जीजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- लेखक ने जीजी के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं-

(क) स्नेहशील-जीजी लेखक को अपने बच्चों से भी अधिक प्यार करती थीं। वे सारे अनुष्ठान, कर्मकांड लेखक से करवाती थीं ताकि उसे पुण्य मिलें।

(ख) आस्थावान-जीजी आस्थावान नारी थीं। वे परंपराओं, विधियों, अनुष्ठानों में विश्वास रखती थीं तथा श्रद्धा से उन्हें पूरा करती थी।

(ग) तर्कशील-जीजी अपनी बात के समर्थन में तर्क देती थीं। उनके तक के सामने आम व्यक्ति पस्त हो जाता था। इंदर सेना पर पानी फेंकने के पक्ष में जो तर्क वे देती हैं, उनका कोई सानी नहीं। लेखक भी उनके समक्ष स्वयं को कमजोर मानता है।

8. 'गगरी फूटी बैल पियासा' का भाव या प्रतीकार्थ देश के संदर्भ में समझाइए।

उत्तर- 'गगरी फूटी बैल पियासा' एक ओर जहाँ सूखे की ओर बढ़ते समाज का सजीव एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है वहीं यह देश की वर्तमान हालत का भी चित्रण करता है। यहाँ गाँव तथा आम लोगों के कल्याणार्थ भेजी अरबों-खरबों की राशि न जाने कहाँ गुम हो जाती है। भ्रष्टाचार का दानव इस समूची राशि को निगल जाता है और आम आदमी की स्थिति जस की तस रह जाती है और उसकी आवश्यकता रूपी प्यास अनबुझी रह जाती है।

9. 'काल मेघा पानी दें।' सस्मरण विज्ञान के सत्य पर सहज प्रेम की विजय का चित्र प्रस्तुत करता हैं-स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण में वर्षा न होना, सूखा पड़ना आदि के विषय में विज्ञान अपना तर्क देता है और वर्षा न होने जैसी सस्या के सही कारणों का ज्ञान कराते हुए हमें सत्य से परिचित कराता है। इस सत्य पर लोक प्रचलित विश्वास और सहज प्रेम की जीत हुई है क्योंकि लोग इस समस्या का हल अपने-अपने ढंग से ढूँढ़ने में जुट जाते हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। लोगों में प्रचलित विश्वास इतना पुष्ट है कि वे विज्ञान की बात मानने को तैयार नहीं होते हैं।

10. धर्मवीर भारती मेंढक मंडली पर पानी डालना क्यों व्यर्थ मानते थे?

उत्तर- लेखक धर्मवीर भारती मेंढक मंडली पर पानी डालना इसलिए व्यर्थ मानता है क्योंकि चारों ओर पानी की घोर कमी हैं। लोग पीने के लिए बड़ी कठिनाई से बाल्टी भर पानी इकट्ठा करके रखे हुए हैं, जो इस मेंढक मंडली पर फेंक कर पानी की घोर बर्बादी करते हैं। इससे देश की अति होती है। वह पानी को यूँ फेकना अंधविश्वास के सिवा कुछ नहीं मानता है।

11. 'काले मेघा पानी दे' में लेखक ने लोक मान्यताओं के पीछे छिपे किस तर्क को उभारा है, आप भी अपने जीवन के अनुभव से किसी अंधविश्वास के पीछे छिप तक को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'काले मेघा पानी दे' में लेखक ने लोक मान्यताओं के पीछे छिपे उस तर्क को उभारा है, जिसके अनुसार ऐसी मान्यता है कि जब तक हम किसी को कुछ देंगे नहीं, तब तक उससे लेने का हकदार कैसे बन सकते हैं। उदाहरणतया-यदि हम इंद्र देवता को पानी नहीं देंगे तो वे हमें पानी क्यों देंगे। इंद्र सेना पर बाल्टी भरकर पानी फेंकना ऐसी ही लोकमान्यता का प्रमाण है।

हमारे जीवन के अनुभव से अंधविश्वास के पीछे छिपा तर्क यह है कि यदि काली बिल्ली रास्ता काट जाती है तो अंधविश्वासी लोग कहते हैं कि रुक जाओ, बाद में जाना, पर मेरा तर्क यह है कि इसमें कोई सत्यता नहीं है। यह समय को बरबाद करने के अलावा कुछ नहीं है।

12. मेंढक मंडली पर पानी डालने को लेकर लेखक और जीजी के विचारों में क्या भिन्नता थी?

उत्तर- मेंढक मंडली पर पानी डालने को लेकर लेखक का विचार यह था कि यह पानी की घोर बबांदी है। भीषण गर्मी में जब पानी पीने को नहीं मिलता हो और लोग दूरदराज से इसे लाए हों तो ऐसे पानी को इस मंडली पर फेंकना देश का नुकसान है। इसके विपरीत जीजी इसे पानी की बुवाई मानती हैं। वे कहती हैं कि सूखे के समय हम अपने घर का पानी इंदर सेना पर फेंकते हैं, तो यह भी एक प्रकार की बुवाई है। यह पानी गली में बोया जाता है जिसके बदले में गाँव, शहर, कस्बों में बादलों की फसल आ जाती है।

<u>पाठ पर आधारित अन्य प्रश्नोत्तर</u>

1. इन्दर सेना घर-घर जाकर पानी क्यो माँगती थी?

उत्तर- गाँव के लोग बारिश के लिए भगवान इंद्र से प्रार्थना किया करते थे। जब पूजा-पाठ व्रत आदि उपाय असफल हो जाते थे तो भगवान इंद्र को प्रसन्न करने के लिए गाँव के किशोर, बच्चे कीचड़ में लथपथ होकर गली-गली घूमकर लोगों से पानी माँगते थे।

2. इन्दरसेना को लेखक मेढक-मंडली क्यों कहता है, जीजी के बार-बार कहने पर भी वह इन्दरसेना पर पानी फेंकने को राजी क्यों नहीं होता?

उत्तर- इन्दरसेना का कार्य आर्यसमाजी विधारधारा वाले लेखक को अंधविश्वास लगता है, उसका मानना है कि यदि इंदरसेना देवता से पानी दिलवा सकती है तो स्वयं अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेती? पानी की कमी होने पर भी लोग घर में एकत्र किये हुए पानी को इंदरसेना पर फेंकते हैं। लेखक इसे पानी की निर्मम बरबादी मानता है।

3. रूठे हुए लेखक को जीजी ने किस प्रकार समझाया?

उत्तर- जीजी ने लेखक को प्यार से लड्डू मठरी खिलाते हुए निम्न तर्क दिए-

1- **त्याग का महत्व**- कुछ पाने के लिए कुछ देना पड़ता है।

2- **दान की महत्ता**- ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है। जो चीज अपने पास भी कम हो और अपनी आवश्यकता को भूलकर वह चीज दूसरों को दान कर देना ही त्याग है।

3- **इंद्रदेव को जल का अर्ध्य चढाना**-इंदरसेना पर पानी फेंकना पानी की बरबादी नहीं बल्कि इंद्रदेव को जल का अर्ध्य चढ़ाना है।

4- **पानी की बुवाई करना**- जिस प्रकार किसान फ़सल उगाने के लिए जमीन पर बीज डालकर बुवाई करता है वैसे ही पानी वाले बादलों की फ़सल पाने के लिए इन्दर सेना पर पानी डाल कर पानी की बुवाई की जाती है।

4. नदियों का भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है?

उत्तर- गंगा भारतीय समाज में सबसे पूज्य सदानीरा नदी है। जिसका भारतीय इतिहास में धार्मिक, पौराणिक और सांस्कृतिक महत्व है। वह भारतीयों के लिए केवल एक नदी नहीं अपितु माँ है, स्वर्ग की सीढ़ी है, मोक्षदायिनी है। उसमें पानी नहीं अपितु अमृत तुल्य जल बहता है। भारतीय संस्कृति में नदियों के किनारे मानव सभ्यताएँ फली-फूली हैं। बड़े-बड़े नगर तीर्थस्थान नदियों के किनारे ही स्थित हैं ऐसे परिवेश में भारतवासी सबसे पहले गंगा मैया की जय ही बोलेंगे। नदियाँ हमारे जीवन का आधार हैं, हमारा देश कृषि प्रधान है। नदियों के जल से ही भारत भूमि हरी-भरी है। नदियों के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते, यही कारण है कि हम भारतीय नदियों की पूजा करते हैं।

5. आजादी के पचास वर्षों के बाद भी लेखक क्यों दुखी है, उसके मन में कौन से प्रश्न उठ रहे हैं?

उत्तर- आजादी के पचास वर्षों बाद भी भारतीयों की सोच में सकारात्मक बदलाव न देखकर लेखक दुखी है। उसके मन में कई प्रश्न उठ रहे हैं-

1. क्या हम सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र हैं?

2. क्या हम अपने देश की संस्कृति और सभ्यता को समझ पाए हैं?

3. राष्ट्र निर्माण में हम पीछे क्यों हैं, हम देश के लिए क्या कर रहे हैं?

4. हम स्वार्थ और भ्रष्टाचार मे लिप्त रहते हैं, त्याग में विश्वास क्यों नहीं करते?

5. सरकार द्वारा चलाई जा रही सुधारवादी योजनाएँ गरीबों तक क्यों नहीं पहुँचती है?

गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

सचमुच ऐसे दिन होते जब गली-मुहल्ला, गाँव-शहर हर जगह लोग गरमी में भुन-भुन कर त्राहिमाम कर रहे होते, जेठ के दसतपा बीतकर आषाढ का पहला पखवाड़ा बीत चुका होता पर क्षितिज पर कहीं बादलों की रेख भी नहीं दीखती होती, कुएँ सूखने लगते, नलों में एक तो बहुत कम पानी आता और आता भी तो आधी रात को, वो भी खोलता हुआ पानी हो। शहरों की तुलना में गाँव में और भी हालत खराब थी। जहाँ जुताई होनी चाहिए थी वहाँ खेतों की मिट्टी सूखकर पत्थर हो जाती फिर उसमें पपड़ी पड़कर जमीन फटने लगती, लू ऐसी कि चलते-चलते आदमी गिर पड़े। ढोर-डंगर प्यास के मारे मरने लगते लेकिन बारिश का कहीं नाम निशान नहीं, ऐसे में पूजा-पाठ कथा-विधान सब करके लोग जब हार जाते तब अंतिम उपाय के रूप में निकलती यह इन्दर सेना।

1. वर्षा न होने पर लोगों की क्या स्थिति हो गयी थी?

उत्तर- वर्षा न होने पर गरमी के कारण लोग लू लगने से बेहोश होने लगे। गाँव-शहर सभी जगह पानी का अभाव हो गया। कुएँ सूख गए, खेतों की मिट्टी सूखकर पत्थर के समान कठोर होकर फट गयी। घरों में नलों में पानी बहुत कम आता था। पशु प्यास के मारे मरने लगे थे।

2. वर्षा के देवता कौन हैं उनको प्रसन्न करने के लिए क्या उपाय किए जाते थे?

उत्तर- वर्षा के देवता भगवान इन्द्र हैं उनको प्रसन्न करने के लिए पूजा-पाठ, कथा-विधान कराए जाते थे। ताकि इन्द्र देव प्रसन्न होकर बादलों की सेना भेजकर झमाझम बारिश कराएँ और लोगों के कष्ट दूर हों।

3. वर्षा कराने के अंतिम उपाय के रूप में क्या किया जाता था?

उत्तर- जब पूजा-पाठ कथा-विधान सब करके लोग हार जाते थे तब अंतिम उपाय के रूप में इन्दर सेना आती थी। नंग-धड़ग, कीचड़ में लथपथ, 'काले मेघा पानी दे पानी दे गुड़धानी दे' की टेर लगाकर प्यास से सूखते गलों और सूखते खेतों के लिए मेघों को पुकारती हुई टोली बनाकर निकल पड़ती थी।

4. आशय स्पष्ट करें-

जेठ के दसतपा बीतकर आषाढ़ का पहला पखवाड़ा बीत चुका होता पर क्षितिज में कहीं बादलों की रेख भी नजर नहीं आती।

उत्तर- आशय- जेठ का महीना है, भीषण गरमी हैं, तपते हुए दस दिन बीत कर आषाढ का महीना भी आधा बीत गया, पर पानी के लिए तड़पते, वर्षा की आशा में आसमान की ओर ताकते लोगों को कहीं बादल नजर नहीं आ रहे।